मुखकमल मुकट छबि

मंगला चरण

याद करो हक मोमिनों, खेल में अपना खसम।
हकें कौल किया उतरते, अलस्तो-बे-रब-कुंम।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! इस संसार में अपने खसम श्री राजजी महाराज को याद करो। जिन्होंने खेल में आते समय कहा कि मैं ही तुम्हारा खावंद हूं।

तब रूहों वले कह्या, बीच हक खिलवत।
मजकूर किया हकें तुमसों, वह जिन भूलो न्यामत।। २ ।।

तब हम रूहों ने मूल-मिलावा में कहा था कि बेशक, आप ही हमारे खावंद हैं। श्री राजजी महाराज ने तुमसे कई बातें की थीं। उन्हें तुम अब मत भूलो।

हुकमें ए कुंजी ल्याया इलम, हुकमें ले आया फुरमान।
दई बड़ाई रूहों हुकमें, हुकमें दई भिस्त जहान।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम ही कुरान को लाया है। हुकम ही जागृत बुद्धि का तारतम लाया है। हुकम ने ही सारी दुनियां को अखण्ड मुक्ति देकर रूहों को मान दिया है।

हुकमें हादी आइया, और हुकमें आए मोमिन।
और फुरमान भेज्या इनपे, हकें कुंजी भेजी बैठ वतन।। ४ ।।

हुकम से श्री श्यामाजी आए। हुकम से मोमिन आए। जिनके वास्ते कुरान और जागृत बुद्धि का ज्ञान परमधाम से श्री राजजी ने भेजा।

और भी हुकमें ए किया, लिया रूह अल्ला का भेस।
पेहेचान दई सब असों की, माहें बैठे दे आवेस।। ५ ।।

हुकम ने ही श्री श्यामाजी का खेल में देवचन्द्रजी का भेष धारण किया तथा क्षर, अक्षर और अक्षरातीत की पहचान अपने आवेश से कराई।

इलम दिया सब असों का, कहूं जरा न रही सक।
हम हादी मोमिन सब मिल, करें जारी वास्ते इस्क।। ६ ।।

क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के अशों के सब संशय मिटा दिए। अब हम श्री श्यामाजी महारानी और सब मोमिन मिलकर इश्क के वास्ते ही श्री राजजी महाराज से दोस्ती करें।

और जेती किताबें दुनी में, तिन सबों पोहोंची सरत।
सो सब खोली किताबें हुकमें, केहे दई सबों कयामत।। ७ ।।

दुनियां में जितने भी धर्मग्रन्थ हैं, उन सबमें बताया हुआ कयामत का समय आ गया है, इसलिए अब हुकम ने इन सब ग्रन्थों के रहस्य खोल दिए हैं। कयामत की पहचान करा दी है।

Nijanand App

फिराए दिए सब फिरके, सब आए बीच हक दीन।
भिस्त दई हम सबन को, ल्याए सब हक पर आकीन।। ८ ।।

अब सब धर्म, पंथ, पैंडों वालों को झूठ की पूजा से छुड़ाकर एक अक्षरातीत पारब्रह्म की पूजक बनाकर एक निजानन्द सम्प्रदाय में ले आए और सब पारब्रह्म के ऊपर यकीन लाए, जिससे हमने सबको बहिश्तों में अखण्ड किया।

बका तरफ कोई न जानत, ए जो चौदे तबक।
सो रात मेटके दिन किया, पट खोल अर्स हक।। ९ ।।

चौदह लोक के ब्रह्माण्ड में कोई नहीं जानता था कि अखण्ड परमधाम कहां है? इसलिए इस अज्ञान को मिटाकर श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की पहचान करा दी।

ऐसा खेल इन भांतका, यामें गई ना कबूं किन सक।
ताको साफ किए हम हुकमें, सब जले बीच इस्क।। १० ।।

यह संसार का खेल ऐसा था कि आज दिन तक किसी के संशय नहीं मिटे थे। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से हमने सबके दिलों के संशय मिटा दिए। अब सभी श्री राजजी महाराज के इश्क से पश्चाताप से निर्मल होकर सुख लेंगे।

हम मांगें इस्क वतनी, आई हमपे हक न्यामत।
हमें ऐसा खेल देखाइया, इत बैठे देखें खिलवत।। ११ ।।

हमारे पास परमधाम की न्यामत जागृत बुद्धि की अखण्ड तारतम वाणी है, इसलिए हम अपने वतन का इश्क मांगते हैं। श्री राजजी महाराज ने हमें ऐसा खेल दिखाया कि हम खेल में बैठकर ही मूल-मिलावा को देख रहे हैं।

ऐसे किए हमें इलमें, कोई छिपी न रही हकीकत।
जाहेर गुझ सब अर्सों की, ऐसी पाई हक मारफत।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान ने हमारी ऐसी हालत कर दी कि हमसे कोई भी परमधाम की हकीकत छिपी नहीं रही। इस ज्ञान से सभी अर्शों के क्षर, अक्षर, अक्षरातीत के गुझ भेद भी जाहिर हो गए।

हम झूठी जिमी बीच बैठ के, करें जाहेर हक सूरत।
एही ख्वाब के बीच में, बताए दई वाहेदत।। १३ ।।

अब हम झूठे संसार में बैठकर श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन करते हैं, क्योंकि इस संसार के बीच इलम ने हमें हमारी एकदिली की पहचान करा दी है।

तो ए झूठी जिमी कायम हुई, ऐसी हक बरकत।
जानें आगूं कह्या रसूलने, देसी हम सबों भिस्त।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज की कृपा से ही इस झूठे ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति मिली। रसूल साहब ने पहले से आकर कहा था कि वक्त आखिरत को आकर हम मोमिन सबको अखण्ड बहिश्तों में कायम करेंगे।

Nijanand App

इलमें ऐसे बेसक किए, इत बैठे पाइए सुध।
हम इत आए बिना, देखी खेल की सब विध।। १५ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान ने इस तरह से संशय मिटा दिए कि अब हमें यहां बैठे-बैठे ही सब पहचान करा दी। हमारे खेल में आए बिना ही हमने खेल की सारी हकीकत को जान लिया।

हम तेहेकीक रूहें अर्स की, इन इलमें किए बेसक।
ए देख्या खेल झूठा जान के, क्यों छोड़ें बरनन हक।। १६ ।।

इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ने हमें बता दिया कि हम निश्चित ही परमधाम की रूहें हैं और इस झूठे खेल को हमने जान बूझकर देखा है तो फिर श्री राजजी महाराज का वर्णन क्यों नहीं करें?

कह्या रसूलें फुरमान में, अर्स दिल मोमिन।
हम और क्यों केहेलाइए, बिना अर्स हक वतन।। १७ ।।

रसूल साहब ने कुरान में कहा है कि मोमिनों का दिल खुदा का अर्श है। श्री राजजी महाराज के वतन के बिना हम दूसरे कैसे कहलाते?

ताथें फेर फेर बरनन, करें हक बका सूरत।
हुकम इलम यों केहेवहीं, कोई और न या बिन कित।। १८ ।।

इसलिए बार-बार श्री राजजी महाराज के अखण्ड स्वरूप का वर्णन करती हूं, क्योंकि श्री राजजी महाराज का हुकम और इलम इस तरह से कहता है कि श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त कहीं भी कोई और नहीं है।

खिनमें सिनगार बदलें, करें नए नए रूप अनेक।
होत उतारे पेहेने बिना, ए क्यों कह्यो जाए विवेक।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप के एक क्षण में अनेक स्वरूप बदल जाते हैं। सिनगार को उतारे और पहने बिना ही बदले हुए रूप दिखाई देते हैं, इसलिए इसका विवरण कैसे हो?

हक सिनगार कीजे तो बरनन, जो घड़ी पल ठेहेराए।
एक पाव पलमें, कई रूप रंग देखाए।। २० ।।

श्री राजजी महाराज का सिनगार एक पल ठहरे तो उसका वर्णन करें, परन्तु एक पल के चौथाई भाग में ही जहां कई तरह के रूप और रंग दिखाई देने लगें, तो उनका वर्णन कैसे करें?

और भी हक सरूप की, इन विध है बरनन।
रूह देखें नए नए सिनगार, जिन जैसी चितवन।। २१ ।।

और भी एक बात यह है कि श्री राजजी महाराज के स्वरूप के सिनगार का रूहें जैसी-जैसी इच्छा करती हैं वैसे-वैसे उन्हें नए-नए सिनगार देखने को मिलते हैं। यह वर्णन इस तरह का है।

ताथें बरनन क्यों करूं, किन विध कहूं सिनगार।
ए सोभा हक सूरत की, काहूं वार न पार सुमार।। २२ ।।

जब रूहों की चाहना के अनुसार क्षण-क्षण में सिनगार बदलता है तो उसका वर्णन कैसे करूं? यह श्री राजजी महाराज के स्वरूप की ही शोभा है, जो बेशुमार है।

Nijanand App

झूठी जुबां के सब्दसों, और माएने लेना बका।
जो सहूर कीजे हक इलमें, तो कछू पाइए गुझ छिपा।। २३ ।।

झूठी जबान के शब्दों से अखण्ड परमधाम का वर्णन करना तभी सम्भव है, जब श्री राजजी के जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुछ छिपे रहस्य मिलें।

इलम होवे हक का, और हुकम देवे सहूर।
होए जाग्रत रूह वाहेदत, कछू तब पाइए नूर जहूर।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज का ज्ञान हो और हुकम विचार करने की शक्ति दे, तब परमधाम की रूह जागृत होकर के श्री राजजी महाराज के स्वरूप को देख सकती है।

ए सुपन देह पांच तत्व की, वस्तर भूखन उपले ऐसे हैं।
अर्स रूह सूरत को, मुहकक पेहेनावा क्या कहे।। २५ ।।

मेरी देह सपने की पांच तत्व की है। वस्त्र, आभूषण भी यहां पांच तत्व के हैं। यह जानकर भी मेरी रूह श्री राजजी महाराज के सिनगार का कैसे वर्णन करे?

रूह सूरत नहीं तत्व की, जो वस्तर पेहेन उतारे।
नूर को नूर जो नूर है, कौन तिनको सिनगारे।। २६ ।।

परमधाम के स्वरूप पांच तत्व के नहीं हैं जो वस्त्र पहनें और उतारें। श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा का जो नूर है उसे भला कौन सिनगार करा सका है?

पेहेले दृढ़ कर हक सूरत, ए अंग किन नूर के।
हक जातके निसबती, बका मोमिन समझें ए।। २७ ।।

श्री महामतिजी अपनी रूह को कहती हैं कि श्री राजजी महाराज का तन (अंग) किस नूर का है, उसका पहले दृढ़ता से विचार कर लो। श्री राजजी महाराज के मोमिन ही इस अखण्ड की बात को समझेंगे।

नूर सोभा नूर जहूर, और न सोभा इत।
देखो अर्स तन अकलें, ए सरूप वाहेदत।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप, शोभा और साहेबी सब नूर की है। इसे यदि परमधाम के तन और बुद्धि से देखो, तो यह सब शोभा केवल अंग की ही है।

नाजुकी इन सरूप की, और अति कोमलता।
सो इन अंग जुबां क्या कहे, नूरजमाल सूरत बका।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज का अखण्ड स्वरूप बड़ा नाजुक और कोमल है। यहां के अंग और जबान से वर्णन कैसे करें?

जैसी सरूप की नाजुकी, तैसी सोभा सलूक।
चकलाई चारों तरफों, दिल देख न होए टूक टूक।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज की जैसी नाजुकी (कोमलता) है, वैसे ही सलूकी की शोभा है। मुखारबिन्द की सुन्दरता चारों तरफ फैल रही है, जिसे देखकर दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

Nijanand App

आसिक अपने सौक को, विध विध सुख चहे।
सोई विध विध रूप सरूप के, नई नई लज्जत लहे।। ३१ ।।

आशिक रूहें अपने शौक के वास्ते श्री राजजी से तरह-तरह के सुख चाहती हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज के स्वरूप के नए-नए रूप बदलकर नई-नई लज्जत लेती हैं।

दिल रूहें बारे हजार को, रूप नए नए चाहे दम दम।
दें चाह्या सरूप सबन को, इन विध कादर खसम।। ३२ ।।

बारह हजार रूहों को श्री राजजी महाराज क्षण-क्षण में अपने नए-नए स्वरूप का सुख रूहों के चाहे अनुसार देते हैं। श्री राजजी महाराज हमारे धनी इतने समर्थ हैं।

रूहें दिल सब एकै, नए नए इस्क तरंग।
पिएं प्याले फेर फेर, माहों माहें करें प्रेम जंग।। ३३ ।।

रूहों के दिल सब एक ही हैं, जो नए-नए इश्क की तरंगों के प्याले बार-बार पीती हैं, इसलिए इनके प्रेम की तरंगें आपस में टकराती हैं।

ए बारीक बातें अर्स की, बिन मोमिन न जाने कोए।
मोमिन भी सो जानहीं, जाको आई फजर खुसबोए।। ३४ ।।

यह परमधाम की खास (बारीक) बातें हैं, जो मोमिन ही जान सकते हैं। मोमिन भी वही जानते हैं, जिनके पास जागृत बुद्धि आ गई है।

जो कछू बीच अर्स के, पसु पंखी नंग बन।
सोभा बानी कोमल, खुसबोए रंग रोसन।। ३५ ।।

परमधाम के अन्दर जो कुछ पशु, पक्षी, नग, वन, शोभा, बोली, नरमाई, खुशबू, रंग और तेज है, सब रूहें ही जानती हैं।

मैं नरमाई एक फूल की, जोड़ देखी रूह देह संग।
क्यों जुड़े जिमी सोहोबती, सोहोबत जात हक अंग।। ३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने एक फूल की कोमलता को रूह के संसार की देह के साथ जोड़कर देखा, तो पाया वह हक जात अखण्ड फूल श्री राजजी का अंग है। उसकी तुलना संसार के अंग के साथ कैसे की जाए?

क्यों कर आवे बराबरी, खावंद और खेलौने।
ए मुहकक क्या विचारहीं, जाहेर तफावत इनमें।। ३७ ।।

खावंद और खिलौने आपस में कैसे बराबर हो सकते हैं? यह झूठे ज्ञानी लोग इस पर कैसे विचार कर सकते हैं? क्योंकि खावंद और खिलौने में जाहिरी में ही बहुत फर्क है।

ए चीजें कही सब अर्स की, लीजे माहें सहूर कर।
ए खेलोने रूहन के, नहीं खावंद बराबर।। ३८ ।।

यदि विचार करके देखें तो परमधाम की चीजें रूहों के खिलौने हैं जो खावंद श्री राजजी महाराज की बराबरी नहीं कर सकते।

Nijanand App

अर्स चीज भी लीजे सहूर में, जिन अर्स खावंद हक।
इन अर्स की एक कंकरी, उड़ावे चौदे तबक।। ३९ ।।

फिर अर्श की एक चीज का विचार करें। उसके मालिक श्री राजजी महाराज हैं, जिनके अर्श की एक कंकड़ी के सामने चौदह लोक का ब्रह्माण्ड उड़ जाता है।

इत बैठ झूठी जिमी में, झूठी अकल झूठी जुबान।
अर्स चीज मुकरर क्यों होवहीं, जो कायम अर्स सुभान।। ४० ।।

इस संसार की झूठी जमीन में बैठकर यहां की झूठी अक्ल और झूठी जबान से श्री राजजी महाराज के अखण्ड परमधाम का वर्णन कैसे हो सकता है?

अर्स चीज न आवे इन अकलें, तो क्यों आवे रूह मूरत।
जो ए भी न आवे सहूर में, तो क्यों आवे हक सूरत।। ४१ ।।

परमधाम की कोई भी चीज संसार की अक्ल में नहीं आती तो फिर रूहों के असली परआतम का स्वरूप कैसे यहां की अक्ल में आएगा? जब यह भी यहां की अक्ल में नहीं आता, तो श्री राजजी महाराज का स्वरूप कैसे अक्ल में आएगा?

एक रूहें और खेलौने, देख इत भी तफावत।
सूरत हक हादी रूहें, देख जो कहावें वाहेदत।। ४२ ।।

पहले रूहों और खिलौने के फर्क को देखो और फिर श्री राजश्यामाजी और रूहों के स्वरूप को देखो जो एक दिल कहलाते हैं।

बका चीज जो कायम, तिन जरा न कबूं नुकसान।
जेती चीज इन दुनी की, सो सब फना निदान।। ४३ ।।

परमधाम में जो भी चीज है वह सदा कायम है। उसे कभी नुकसान नहीं होता। दुनियां में जितनी चीजें हैं, वह सब नष्ट होने वाली हैं।

जेती चीज अर्स में, न होए पुरानी कब।
नुकसान जरा न होवहीं, ए लीजे सहूर में सब।। ४४ ।।

परमधाम की कोई भी चीज कभी पुरानी नहीं होती। यह अच्छी तरह से विचार करके देख लो कि वहां जरा भी नुकसान नहीं होता।

तो हक अर्स है कह्या, ए चौदे तबक जरा नाहें।
जो नाहीं सो है को क्या कहे, ताथें आवत न सब्द माहें।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज के अर्श को सदा अखण्ड कहा है। चौदह तबकों को नाशवान कहा है। जो स्वयं नाशवान है वह अखण्ड का वर्णन कैसे करे?

जेती चीजें अर्स की, जोत इस्क मीठी बान।
खूबी खुसबोए हक चाहेल, तहां नजीक ना नुकसान।। ४६ ।।

परमधाम में जितनी भी चीजें हैं उनमें जोत, इश्क, मीठी बोली, खूबी, खुशबू श्री राजजी की चाहना अनुसार ही होती है। वहां जरा भी नुकसान नहीं होता।

Nijanand App

नूर और नूरतजल्ला, कहे महंमद दो मकान।
दोए सूरतें जुदी कही, ताकी रूहअल्ला दई पेहेचान।।४७।।

रसूल साहब ने अक्षरधाम और परमधाम दो मकानों का वर्णन किया है। दोनों की दो सूरतें (अक्षर ब्रह्म और अक्षरातीत) अलग-अलग बताई हैं, जिनकी जानकारी श्यामा महारानी ने भी दी।

नाजुक नरम तेज जोत में, सलूकी सोभा मीठी जुबान।
सुन्दर सरूप खुसबोए सों, पूरन प्रेम सुभान।।४८।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप अति नाजुक, नरम, तेज, जोत, सलूकी, शोभा, मीठी बोली, सुन्दरता तथा सुगन्धि वाले हैं और प्रेम से भरपूर हैं।

सोई सरूप है नूर का, सोई सूरत हादी जान।
रुहें सूरत वाहेदत में, ए पूरन इस्क परवान।।४९।।

जो स्वरूप श्री राजजी महाराज का है, वही स्वरूप श्यामा महारानी का और वैसे ही रूहों की एक दिली का है। यह सब इश्क से भरपूर हैं।

हक सूरत अति सोहनी, दोऊ जुगल किसोर।
गौर मुख अति सुन्दर, ललित कोमल अति जोर।।५०।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप बड़ा मनमोहक है। श्री राजश्यामाजी दोनों ही बड़े गोरे रंग के हैं। मुख बड़े सुन्दर हैं तथा कोमल और लुभावने हैं।

और रूहों की सूरतें, जो असल अर्स में तन।
सो सहूर कीजे हक इलमें, देखो अपना तन मोमिन।।५१।।

हे रूहो! जागृत बुद्धि की वाणी से अपने स्वरूप, जो परमधाम में तुम्हारी परआतम है, को विचार कर देखो।

खूबी खुसाली न आवे सब्द में, ना रंग रस बुध बान।
कोई न आवे सोभा सब्द में, मुख अर्स खावंद मेहेरबान।।५२।।

तुम्हारे इन स्वरूपों की खूबी, खुशाली, रंग, रस, बुद्धि, वाणी का बयान शब्दों में नहीं होता तो फिर श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा यहां के शब्दों में कैसे कहें?

जैसी है हक सूरत, और तिन वस्तर भूखन।
जो सोभा देत इन सूरतें, सो क्यों कहे जांए जुबां इन।।५३।।

जैसे श्री राजजी महाराज का स्वरूप है, वैसे ही उनके वस्त्र, आभूषण हैं। जो रूहों को अच्छे लगते हैं। उसकी शोभा यहां की जबान से कैसे कही जाए?

दिल में जानों दे निमूना, समझाऊं रूहों को।
खूबी दुनी की देख के, लगाए देखों अर्स सों।।५४।।

दिल में चाहना होती है कि रूहों को समझाने के वास्ते यहां का नमूना देकर बयान करूं। फिर दुनियां की सुन्दरता को देखकर परमधाम की सुन्दरता से मिलाऊं।

Nijanand App

हक अंग कैसे बरनवूं, इन झूठी जुबां के बल।
बका अंग क्यों कर कहूं, यों फेर फेर कहे अकल।।५५।।

लेकिन इस झूठी जबान की शक्ति से श्री राजजी महाराज के अंग का कैसे वर्णन करूं? श्री राजजी महाराज के अखण्ड अंग का वर्णन कैसे करूं? यह मेरी बुद्धि बार-बार कहती है।

रूप रंग इत क्यों कहिए, ले मसाला इत का।
ए सुकन सारे फना मिने, हक अंग अर्स बका।।५६।।

परमधाम के रूप और रंग का वर्णन संसार की उपमा से कैसे कहें? क्योंकि यहां की सारी चीजें नाशवान हैं और श्री राजजी महाराज के अंग अखण्ड परमधाम के हैं।

रूप रंग गौर लालक, कहूं नूर जोत रोसन।
ए सब्द सारे ब्रह्मांड के, अर्स जरा उड़ावे सबन।।५७।।

संसार के रूप, रंग, गोरापन, लालिमा, नूर, जोत, रोशनी, आदि शब्द झूठे ब्रह्माण्ड के हैं, जो परमधाम के एक कण के सामने उड़ जाते हैं।

गौर हक अंग केहेत हों, ए गौर रंग लाहूत।
और कहूं सोभा सलूकी, ए छबि है अदभूत।।५८।।

श्री राजजी महाराज का गोरा अंग, जो मैं कहती हूं, तो वह गोरा रंग परमधाम का समझना। इनके अंगों की शोभा और सलूकी जो बताती हूं, उसकी छबि तो बड़ी ही अद्‌भुत है।

चकलाई हक अंगों की, रूप जाने अरवा अर्स।
रूह जागी जाने खेल में, जो हुई होए अरस परस।।५९।।

श्री राजजी महाराज के मुख की सुन्दरता को परमधाम की रूहें ही जानती हैं। जो रूहें जागृत बुद्धि के ज्ञान से खेल में जाग जाती हैं, वही श्री राजजी महाराज के साथ एक रस हो जाती हैं।

जो रूह जगाए देखिए, तो ठौर नहीं बोलन।
जो चुप कर रहिए, तो क्या लें आहार मोमिन।।६०।।

जो रूह जाग जाती है, तो फिर उसके बोलने का कोई ठिकाना ही नहीं। यदि चुप होकर बैठ जाए तो मोमिनों को आहार कैसे मिलेगा?

मैं देख्या दिल विचार के, सुनियो तुम मोमिन।
देऊं निमूना दुनी अर्स का, तुम देखियो दिल रोसन।।६१।।

हे मोमिनो! मैंने दिल में विचार करके देखा। तुम भी समझकर देखना। दुनियां का नमूना परमधाम को क्यों दिया? जागृत बुद्धि से विचार करके देखो।

कही कोमलता कमलन की, और जोत जवेरन।
रंग सुरंग जानवरों, कई स्वर मीठी जुबां इन।।६२।।

मैंने चरण कमल की कोमलता, जानवरों के लाल रंग, जवेरों की जोत और जानवरों के मीठे स्वर यहां की जबान से बताए हैं।

Nijanand App

कई खुसबोई माहें पंखियों, कई खुसबोए माहें फूलन।
कई सोभा पसु पंखियों, कई नरमाई परन।।६३ ।।

इस तरह से पक्षियों में तथा फूलों में कई तरह की सुगन्धि बताई है। पशु-पक्षियों की कई तरह की शोभा बताई है और उनके परों की नरमाई का बयान किया है।

फूल कमल कई पसम, कैसी कोमल दुनी इन।
फूल अत्तर चोवा मुस्क, और जोत हीरा जवेरन।।६४ ।।

संसार में कमल का फूल, पशम और कई चीजें कोमल कही जाती हैं। इस तरह से फूलों में इत्र, सुगन्धित तेल खुशबूदार कहे जाते हैं तथा हीरा जवेरों की जोत की उपमा दी जाती है।

देखो प्रीत पसुअन की, और देखो प्रीत पंखियन।
एक चलें दूजा ना रहे, जीव जात माहें खिन।।६५ ।।

संसार के पशुओं तथा पक्षियों की प्रीत को देखो। एक के मर जाने पर दूसरा एक क्षण में ही मर जाता है।

छोटे बड़े जीव कई रंग के, जानों के देह कुंदन।
कई नकस कई बूटियां, कई कांगरी चित्रामन।।६६ ।।

परमधाम के छोटे बड़े जानवरों में कई तरह के रंग हैं। कई के तन सोने के समान दिखते हैं। कई के तन में नक्शकारी बूटियां हैं और कई के तन में कांगरी और चित्र बने हैं।

इन भांत केती कहूं, कई खूबी बिना हिसाब।
ले खुलासा इन का, छोड़ दीजे झूठा ख्वाब।।६७ ।।

इस तरह की खूबी परमधाम में बिना हिसाब है। अब इनको समझकर सपने के संसार को छोड़ दो।

देख दुनी देखो अर्स को, कई रंगों सोभें जानवर।
सुख सनेह खूबी खुसाली, कई मुख बोलत मीठे स्वर।।६८ ।।

अब दुनियां को देखो और परमधाम को देखो। परमधाम के जानवरों में कई तरह के रंग शोभा देते हैं। उनमें कई तरह के सुख, प्यार, खूबियां, खुशालियां हैं। यह मीठे स्वर में बोलते हैं।

जीव जल थल या जानवरों, कई केसों परन।
रंग खूबी देख विचार के, ले अर्स मसाला इन।।६९ ।।

जीव जल के हों या थल के, या जानवरों के कई तरह के बाल, परों के रंगों की खूबी देखो। विचार करके देखो और बताओ कि परमधाम के और दुनियां के पशु-पक्षियों में कितना अन्तर है?

इन विध मैं केती कहूं, रंग खूबी खुसबोए।
परों फूलों चित्रामन, कही प्रीत इनों की सोए।।७० ।।

इस तरह मैं कहां तक कहूं? परमधाम के रंग, खूबी, खुशबू, परों पर फूलों के चित्र और जानवरों की परस्पर प्रीत बेशुमार है।

Nijanand App

इन विध देखो निमूना, ए झूठी जिमी का विचार।
तो कौन विध होसी अर्स में, जो सोभा वार न पार सुमार।।७१ ।।

इस तरह से झूठी जमीन के नमूने को समझकर परमधाम की हकीकत को समझो, तो पता लगता है कि परमधाम की शोभा बेशुमार है।

एक देखी विध संसार की, और विध कही अर्स।
सांच आगे झूठ कछू नहीं, कर देखो दिल दुरुस्त।।७२ ।।

एक संसार की विधि देखी और परमधाम की विधि कही है। इन दोनों को दिल में विचार करके देखो तो पता लगेगा कि सत के आगे झूठ कुछ नहीं है।

सांच भोम की कंकरी, उड़ावे जिमी आसमान।
कैसी होसी अर्स खूबियां, जो खेलौंने अर्स सुभान।।७३ ।।

परमधाम की अखण्ड भूमि की एक कंकरी संसार के जमीन आसमान को उड़ा देती है। फिर पशु, पक्षी और जानवर जो श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं, इनकी खूबी परमधाम में कैसी होगी?

सो खूब खेलौंने देखिए, इनों निमूना कोई नाहें।
सिफत इनों ना केहे सकों, मेरी इन जुबाएं।।७४ ।।

अब इन खूब खुशाली और पशु, पक्षी खिलौनों को देखो, जिनका संसार में कोई नमूना नहीं है। मैं अपनी इस संसार की जबान से इनकी सिफत नहीं कह सकती हूं।

कई जुगतें खूबियां, कई जुगतें सनकूल।
कई जुगतें सलूकियां, कई जुगतें रस फूल।।७५ ।।

इनमें कई तरह की युक्तियां, खूबियां, सलूकियां, खुशियां और कई तरह के फूलों के रस की शोभा दिखाई देती है।

कई जुगतें चित्रामन, ऊपर पर केसन।
कई मुख मीठी बानियां, स्वर जिकर करें रोसन।।७६ ।।

पशु-पक्षियों के परों पर और बालों पर कई तरह के चित्र हैं। वह अपनी सुन्दर बोली और स्वर से श्री राजजी महाराज का ही जिक्र करते हैं।

जेती खूबियां अर्स की, सब देखिए जमाकर।
लीजे सब पेहेचान के, अंदर दिल में धर।।७७ ।।

परमधाम की सभी खूबियों का जोड़ लगाकर पहचान लो और दिल में धारण कर लो।

रंग रस नूर रोसनी, सोभा सुन्दर खूबी खुसबोए।
तेज जोत कोमल, देख नरम नाजुकी सोए।।७८ ।।

पशु-पक्षियों के रंग, रस, नूर, रोशनी, शोभा, सुन्दरता, खूबी, सुगन्धि, तेज, जोत, नरमाई, कोमलता और नजाकत को देखो।

Nijanand App

दिल अर्स खुलासा लेय के, और देख अर्स रूह अंग।
रूहों सरभर कोई आवे नहीं, खूबी रूप सलूकी रंग।।७९।।

परमधाम की इन सब चीजों को देखो और फिर रूहों के तनों (परआतम) को देखो, तो ऊपर कही सब खूबियां, रूप, रंग रूहों जैसे किसी के नहीं हैं।

खेल खावंद कैसी सरभर, जो रूहें अंग हादी नूर।
हादी नूर हक जातका, मोमिन देखें अर्स सहूर।।८०।।

फिर खेल के दिखाने वाले श्री राजजी महाराज की बराबरी कैसे करें? रूहें श्यामा महारानी के नूरी तन हैं। श्यामा महारानी श्री राजजी के नूरी तन हैं। जिन्हें मोमिन जागृत बुद्धि के ज्ञान से देख सकते हैं।

सिफत ऐसी कही मोमिनों, जाके अक्स का दिल अर्स।
हक सुपने में भी संग कहे, रूहें इन विध अरस-परस।।८१।।

मोमिनों की इतनी बड़ी महिमा बताई कि इनके प्रतिबिम्ब जो खेल में हैं, उनके दिलों को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श किया है। इस तरह से श्री राजजी महाराज सपने में भी मोमिनों के साथ हैं। इस तरह से मोमिन और श्री राजजी महाराज एक ही स्वरूप हैं।

ए जो मोमिन अक्स कहे, जानों आए दुनियां माहें।
हक अर्स कर बैठे दिल को, जुदे इत भी छोड़े नाहें।।८२।।

यह जो मोमिनों के प्रतिबिम्ब संसार में कहे गए हैं, इससे लगता है मोमिन दुनियां में आए हैं और इनके दिलों में श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं और यहां भी उनका साथ नहीं छोड़ रहे हैं।

अक्स के जो असल, ताए खेलावत सूरत।
सो हिंमत अपनी क्यों छोड़हीं, जामे अर्स की बरकत।।८३।।

इनकी प्रतिबिम्ब की जो परआतम है उसको श्री राजजी महाराज का स्वरूप आनन्दित करता है, इसलिए जिनमें परमधाम की शक्ति है वह संसार में कैसे हिम्मत छोड़ें?

दुनी नाम सुनत नरक छूटत, इनोंपे तो असल नाम।
दिल भी हकें अर्स कह्या, याकी साहेदी अल्ला कलाम।।८४।।

दुनियां तो पारब्रह्म के लौकिक नाम 'श्री कृष्ण अनादि अक्षरातीत' सुनने से आवागमन के चक्कर से छूटकर अखण्ड हो जाएगी, पर रूहों के पास परमधाम में जो असल नाम "श्यामा श्याम" है, वह है। इन्हीं मोमिनों के दिल को श्री राजजी का अर्श कहा है जिसकी गवाही कुरान देता है।

इलम भी हकें दिया, इनमें जरा न सक।
सो क्यों न करें फैल वतनी, करें कायम चौदे तबक।।८५।।

इन्हीं मोमिनों को श्री राजजी महाराज ने अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया, जिसमें जरा भी संशय नहीं है तो फिर अब यह मोमिन परमधाम की रहनी से चौदह लोक के जीवों को अखण्ड क्यों नहीं करते?

Nijanand App

प्रतिबिंब के जो असल, तिनों हक बैठे खेलावत।
तहां क्यों न होए हक नजर, जो खेल रूहों देखावत।। ८६ ।।

मोमिनों के प्रतिबिम्बों के जो असल तन परमधाम में हैं, उन्हें श्री राजजी महाराज अपने पास बिठाकर खेल दिखा रहे हैं। जहां श्री राजजी महाराज रूहों को खेल दिखा रहे हैं, वहां इन मोमिनों के ऊपर श्री राजजी महाराज की नजर क्यों नहीं होगी?

आड़ा पट भी हकें दिया, पेहेले ऐसा खेल सहूर में ले।
जो खेल आया हक सहूर में, तो क्यों न होए कायम ए।। ८७ ।।

श्री राजजी महाराज ने पहले खेल दिखाने का विचार दिल में लिया और फिर फरामोशी का परदा दिया। अब जो खेल श्री राजजी महाराज के दिल में आ गया तो वह अखण्ड क्यों नहीं होगा?

हुए इन खेल के खावंद, प्रतिबिंब मोमिनों नाम।
सो क्यों न लें इस्क अपना, जिन अरवा हुज्जत स्यामा स्याम।। ८८ ।।

मोमिनों के प्रतिबिम्ब के नाम इस खेल के मालिक बन गए। अब वह अपने श्यामा श्याम से अपना इश्क क्यों न लें? जिनकी निसबत उनसे है।

बड़ी बड़ाई इनकी, जिन इस्कें चौदे तबक।
करम जलाए पाक किए, तिन सबों पोहोंचाए हक।। ८९ ।।

इन मोमिनों की बड़ी बड़ाई लिखी है। जिनके इश्क ने चौदह तबकों को पश्चाताप की अग्नि में जलाकर पाक कर अखण्ड मुक्ति प्रदान की।

इनों धोखा कैसा अर्स का, जिन सूरतें खेलावें असल।
खेलाए के खैंचे आपमें, तब असलै में नकल।। ९० ।।

जिनकी परआतम को चरणों में बिठाकर श्री राजजी महाराज खेल दिखा रहे हैं, उनको परमधाम के प्रति संशय कैसे रह सकता है? श्री राजजी महाराज खेल दिखाकर इनकी नकल को असल में खींच लेंगे।

नकलें असलें जुदागी, एक जरा है आड़ा पट।
कह्या सेहेरग से नजीक, तिन निपट है निकट।। ९१ ।।

नकली तन संसार में और असली तन परमधाम में हैं। एक जरा सा फरामोशी का परदा है, इसलिए मोमिन को श्री राजजी सेहेरग से नजदीक हैं।

इन सुपन देह माफक, हकें दिल में किया प्रवेस।
ए हुकम जैसा कहावत, तैसा बोले हमारा भेस।। ९२ ।।

श्री राजजी महाराज ने उनके स्वप्न के तन के अनुसार ही मोमिनों के दिल में प्रवेश किया है। अब जैसा उनका हुकम कहलवा रहा है, वैसे हमारा सपने का तन बोल रहा है।

अर्स तन का दिल जो, सो दिल देखत है हम को।
प्रतिबिंब हमारे तो कहे, जो दिल हमारे उन दिल मों।। ९३ ।।

हमारी परआतम के दिल हमारे संसार के दिल को देख रहे हैं, इसलिए हमारे इन तनों को परआतम का प्रतिबिम्ब कहा है, क्योंकि हमारे दिल परआतम के दिल में हैं।

Nijanand App

ऐसा खेल किया हुकमें, हमारी उमेदां पूरन।
हम सुख लिए अर्स के, दुनी में आए बिन।। ९४ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम ने हमारी चाहना पूर्ण करने के लिए ऐसा खेल बनाया कि हम दुनियां में आए बिना ही परमधाम के सुख यहा ले रहे हैं।

ना तो ऐसा बरनन क्यों करें, ए जो वाहेदत नूरजमाल।
ना कोई इनका निमूना, ना कोई इन मिसाल।। ९५ ।।

वरना श्री राजजी महाराज की हम अंगना हैं, तो ऐसा वर्णन क्यों करतीं, जबकि संसार में श्री राजजी महाराज का न कोई नमूना है, न कोई मिसाल है।

अर्स भोम की एक कंकरी, तिन आगे ए कछुए नाहें।
तो क्यों दीजे बका सुभान को, सिफत इन जुबांए।। ९६ ।।

परमधाम की एक कंकरी के सामने संसार कुछ भी नहीं है, तो फिर अखण्ड धाम धनी के स्वरूप की सिफत को यहां की जबान से कैसे कहें?

अर्स जिमी सब वाहेदत, दूजा रहे ना इनों नजर।
ज्यों रात होए काली अंधेरी, त्यों मिटाए देवे फजर।। ९७ ।।

परमधाम की अखण्ड जमीन में एकदिली है। उनके सामने दूसरा टिक ही नहीं सकता। जिस तरह से काली अंधेरी रात का अंधेरा प्रातः सूर्य के सामने मिट जाता है।

है हमेसा एक वाहेदत, एक बिना जरा न और।
अंधेर निमूना न लगत, अंधेर राखत है ठौर।। ९८ ।।

संसार के अंधेरे का नमूना यहां उचित लगता नहीं है, क्योंकि संसार के अंधेरे के लिए संसार में ठिकाना है। परमधाम में एक श्री राजजी महाराज के बिना कुछ नहीं है।

ए चौदे तबक कछुए नहीं, वेदों कह्या आकास फूल।
झूठा देखाई देत है, याको अंकूर ना मूल।। ९९ ।।

वेदों ने इस संसार को आकाश के फूल के समान बताया है, अर्थात् जैसे आकाश में फूल होते ही नहीं, वैसे ही यह चौदह तबक भी कुछ नहीं हैं। यह संसार झूठा दिखाई देता है, परन्तु न तो इसकी कोई जड़ है और न कोई डाल।

इत वाहेदत कबूं न जाहेर, झूठे हक को जानें क्यों कर।
सुध वाहेदत क्यों ले सकें, जो उड़ें देखें नजर।। १०० ।।

इस संसार में अखण्ड की सुध देने वाला कोई कभी आया ही नहीं, तो झूठे जीव सत श्री राजजी को जान कैसे सकते हैं? परमधाम की सुध कैसे ले सकते हैं? जिसे देखने मात्र से यह समाप्त हो जाते हैं।

असल बात वाहेदत की, अर्स अरवाहें जानें मोमिन।
इत हक सुध मोमिनों, जाके असल अर्स में तन।। १०१ ।।

परमधाम की असल हकीकत परमधाम की रूहें जानती हैं। संसार में भी अपने घर परमधाम तथा श्री राजजी की सुध केवल मोमिनों को ही है, क्योंकि उनके मूल तन परमधाम में हैं।

Nijanand App

अब तुम सुनियो मोमिनों, अर्स बिने तुमारी बात।
वाहेदत तो कहे मोमिन, जो रूहें असल हक जात।। १०२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम परमधाम की बात को देखो, क्योंकि मोमिनों को ही एक दिल कहा है, क्योंकि तुम ही श्री राजजी के असल अंग हो।

और एक मता रूहन का, देखो अर्स वाहेदत।
लीजो मोमिन दिल में, ए हक अर्स न्यामत।। १०३ ।।

रूहों की एक और खास बात देखो कि परमधाम में इनकी एकदिली है, इसलिए हे मोमिनो! परमधाम की सभी न्यामतें अपने दिल में ग्रहण करो।

नैन एक रूह के, जो सुख लेवें परवरदिगार।
तिन सुख से सुख पोहोंचहीं, दिल रूहों बारे हजार।। १०४ ।।

यदि एक रूह के नैन भी श्री राजजी के सुख लेते हैं, तो उस सुख से बारह हजार रूहों के दिलों को सुख मिलता है।

एक रूह बात करे हक सों, सुख लेवे रस रसनाएं।
सो सुख रूहों आवत, दिल बारे हजार के माहें।। १०५ ।।

इस तरह से यदि एक आत्मा श्री राजजी महाराज से बातों का सुख लेती है, तो वह सुख बारह हजार के दिल में आता है।

हक बोलावें रूह एक को, सो सुख पावे अतंत।
सो बात सुन रूह हक की, सब रूहें सुख पावत।। १०६ ।।

श्री राजजी महाराज एक रूह को बुलाते हैं, तो उसे बेहद सुख मिलता है। फिर उस रूह को जो बात सुनने से सुख मिला है, वह सभी बारह हजार को सुख होता है।

रूह सुख हर एक बात का, हकसों अर्स में लेवत।
सो सुख सुन रूहें सबे, दिल अपने देवत।। १०७ ।।

परमधाम में रूहें हर एक बात का सुख श्री राजजी महाराज से लेती हैं। उस सुख को सुनकर सब रूहें अपने दिल में सुख लेती हैं।

तो हकें कह्या अर्स अपना, मोमिनों का जो दिल।
तो सब ल्याए वाहेदत में, जो यों सुख लेत हिलमिल।। १०८ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अर्श कहा है। सबको अपने चरणों तले मूल-मिलावा में बिठा रखा है, क्योंकि यह सब रूहें हिल-मिलकर सुख लेती हैं।

इन विध सुख केते कहूं, अर्स अरवा मोमिन।
तो आए वाहेदत में, जो हक कदम तले इनों तन।। १०९ ।।

इस तरह से परमधाम की रूहों के सुख कहां तक कहूं, जो मूल-मिलावा में श्री राजजी महाराज के चरणों तले बैठी हैं।

Nijanand App

हकें अर्स कह्या दिल मोमिन, और भेज दिया इलम।
क्यों आवें अर्स दिल झूठ में, इत है हक का हुकम।। ११० ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के दिल को अपना अर्श कहा है और उन्हीं के वास्ते ही अपनी जागृत बुद्धि का ज्ञान भेजा है। जिन मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज बैठे हैं, वह इस झूठे संसार में कैसे आ सकते हैं? परन्तु यह सब श्री राजजी महाराज के हुकम की हिकमत है।

ताथें बरनन इन दिल, अर्स हक का होए।
इस्क हक के से जल जाए, और जरा न रेहेवे कोए।। १११ ।।

इनका दिल श्री राजजी का अर्श होने के कारण से ही यह श्री राजजी का वर्णन करने में समर्थ हैं। बाकी दुनियां तो हक के इश्क की आग में जल जाती है और कुछ भी बाकी नहीं रहता।

इन दिल को अर्स तो कह्या, जो खोल दिए बका द्वार।
ताथें फेर फेर बरनवूं, हक वाहेदत का सिनगार।। ११२ ।।

इन मोमिनों के दिल को अर्श इसलिए कहा है कि इनके कारण परमधाम की पहचान सबको हो गई, इसलिए बार-बार श्री राजजी महाराज का और मोमिनों के सिनगार का वर्णन करती हूं।

किसोर सूरत हादी हक की, सुन्दर सोभा पूरन।
मुख कमल कहूं मुकट की, पीछे सब अंग वस्तर भूखन।। ११३ ।।

श्री राजश्यामाजी का स्वरूप किशोर है, सुन्दर है और शोभा से भरपूर है। अब पहले श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द और मुकुट की शोभा का वर्णन करती हूं। इसके बाद सभी अंग और वस्त्र आभूषणों का वर्णन करूंगी।

नख सिख लों बरनन करूं, याद कर अपना तन।
खोल नैन खिलवत में, बैठ तले चरन।। ११४ ।।

अपनी परआतम को ध्यान में लेकर श्री राजजी महाराज के सिनगार का नख से शिख तक वर्णन करती हूं। ऐसा अनुभव कर कि मेरी परआतम श्री राजजी के चरणों के तले मूल-मिलावे में बैठी है और उनके स्वरूप को देख रही है, सिनगार का वर्णन करती हूं।

जैसा केहेत हों हक को, यों ही हादी जान।
आसिक मासूक दोऊ एक हैं, ए कर दई मसिएं पेहेचान।। ११५ ।।

जैसा श्री राजजी के सिनगार का वर्णन करती हूं, वैसा श्री श्यामाजी का भी समझ लेना। यह दोनों आशिक माशूक, श्री राजश्यामाजी एक हैं। इसकी पहचान श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) ने करा दी है।

जुगल किसोर तो कहे, जो आसिक मासूक एक अंग।
हक खिन में कई रूप बदलें, याही विध हादी रंग।। ११६ ।।

यह श्री राजश्यामाजी एक ही अंग हैं, परन्तु इनको युगल किशोर करके कहा है। श्री राजजी महाराज के एक क्षण में कई सिनगार बदल जाते हैं। इसी तरह श्री श्यामाजी के सिनगार बदल जाते हैं।

Nijanand App

हमारे फुरमान में, हकें केते लिखे कलाम।
मासूक मेरा महंमद, आसिक मेरा नाम।। ११७ ।।

कुरान में श्री राजजी महाराज ने कई जगह लिखा है कि माशूक श्यामा महारानी हैं और मैं आशिक हूं।

।। मंगला चरण सम्पूर्ण ।।

केस तिलक निलाट पर, दोऊ रेखा चली लग कान।
केस न कोई घट बढ़, सोभा चाहिए जैसी सुभान।। ११८ ।।

श्री राजजी महाराज के माथे (मस्तक) पर सुन्दर बाल और तिलक शोभा देता है। बाल दोनों कानों तक और तिलक की दो रेखाएं माथे पर शोभा देती हैं। बाल कोई छोटे बड़े नहीं हैं। जैसे चाहिए वैसे बराबर हैं।

एक स्याम नूर केसन की, चली रोसन बांध किनार।
दूजी गौर निलाट संग, करे जंग जोत अपार।। ११९ ।।

माथे के ऊपर काले बालों का नूर कानों तक जाता है। दूसरा गोरे माथे का नूर, दोनों की किरणें आपस में टकराती हैं।

सोभा चलि आई लवने लग, पीछे आई कान पर होए।
आए मिली दोऊ तरफ की, सोभा केहेवे न समर्थ कोए।। १२० ।।

बालों की शोभा लवने (कनपटी) को लगती हुई कानों तक आती है। दोनों तरफ की शोभा ऐसी सुन्दर है, जिसका वर्णन करने की शक्ति किसी में नहीं है।

याही भांत भौंह नेत्र संग, करत जंग दोऊ जोर।
स्याह उज्जल सरभर दोऊ, चली चढ़ि टेढ़ी अनी मरोर।। १२१ ।।

इस तरह से काली भौंहें नैनों के साथ टकराती हैं। भौंहों का काला रंग, नैनों की उज्ज्वलता और दोनों की टेढ़ाई बड़ी सुन्दर दिखाई देती है।

दोऊ अनियां भौंह केसन की, निलाट तले नैन पर।
रेखा बांध चली दोऊ किनारी, आए अनियां मिली बराबर।। १२२ ।।

भौंहों के दोनों कोने माथे के नीचे नैनों तक आकर मिलते हैं। दोनों किनारों के कोने बराबर एक से सुन्दर शोभा देते हैं।

दोऊ नेत्र किनारी सोभित, घट बढ़ कोई न केस।
उज्जल स्याह दोऊ लरत हैं, कोई दे ना किसी को रेस।। १२३ ।।

आंखों के दोनों किनारों पर भौंहों के बाल शोभा देते हैं। कोई भी घट-बढ़ नहीं है। इस तरह से उज्ज्वल सफेद रंग की तथा काले रंग की किरणें टकराती हैं। कोई किसी से कम नहीं है।

तिलक निलाट न किन किया, असल बन्यो रोसन।
कई रंग खूबी खिन में, सोभा गिनती होए न किन।। १२४ ।।

श्री राजजी महाराज के माथे (मस्तक) पर तिलक किसी ने लगाया नहीं है उनके अंग में ही बना है। जिसके अन्दर कई तरह के रंग की खूबियां हैं जो क्षण-क्षण बदलती हैं, जिनको कोई नहीं गिन सकता।

Nijanand App

देह इन्द्री फरेब की, देखत इल्लत फना।
सो क्यों कहे बका सुभान मुख, इन अंग की जो रसना।। १२५ ।।

मेरे शरीर के गुण, अंग, इन्द्रियां झूठे संसार की हैं, जो क्षण भर में मिट जाने वाली हैं। ऐसे झूठे अंग की जबान से अखण्ड धाम धनी के मुखारबिन्द की शोभा का वर्णन कैसे करें?

नासिका हक सूरत की, ए जो स्वांस देत खुसबोए।
ब्रह्मांड फोड़ इत आवत, इत रूह बास लेत सोए।। १२६ ।।

श्री राजजी महाराज की नासिका के स्वांसों से अति सुगन्धि होती है, जो इस संसार को फोड़कर हमें इस संसार में निसबत होने के कारण यहां मिलती है।

बिन मोमिन कोई ना ले सके, हक नासिका गुन।
कह्या अर्स हक वतन, सो किया दिल जिन।। १२७ ।।

श्री राजजी महाराज की नासिका के गुणों को मोमिनों के अतिरिक्त और कोई नहीं ले सकता, इसलिए ऐसे मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज का अर्श कहा है।

हक सूरत की बारीकियां, ए जानें अर्स अरवाए।
हक सूरत तो जान हीं, जो कोई और होए इसदाए।। १२८ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप की खास बातें परमधाम की रूहें ही जानती हैं। इनके बिना दूसरा कोई तब जाने, जब वह परमधाम में शुरू से ही हो।

तीन खूंनें तले नासिका, खूंना चढ़ता चौथा ऊपर।
ए खूबी जानें रूह अर्स की, ए जो अनी आई नमती उतर।। १२९ ।।

नासिका के नीचे तीन कोने हैं और चौथा कोना ऊपर है। इसकी उतरी हुई टेढ़ाई की खूबी को परमधाम की रूहें ही जानती हैं।

दोऊ छेद्रों के गिरदवाए, यों पांखड़ी फूल कटाव।
बीच अनी आई जो नासिका, ए मोमिन जानें मुख भाव।। १३० ।।

नासिका के दोनों छेदों के चारों तरफ फूल की पंखुड़ी जैसी शोभा है और बीच में जो नोंक आई है, उससे मुखारबिन्द की शोभा का भाव मोमिन जानते हैं।

इन अनिएं और अनी मिली, तिन उतर अनी हुई दोए।
किनार तले दो छेद्र के, सोभा लेत अति सोए।। १३१ ।।

ऊपर के कोने से आकर नीचे के दोनों कोने मिले हैं, जिनके किनारे के नीचे दो छेद बड़े सुन्दर शोभा देते हैं।

दोऊ छेद्र तले अधुर ऊपर, तिन बीच लांक खूंने तीन।
सोई सोभा जाने इन अधुर की, जो होए हुकम आधीन।। १३२ ।।

नासिका के दोनों छेदों के नीचे होंठ शोभा देते हैं और दोनों होंठों के बीच की गहराई में तीन कोने दिखाई देते हैं। इन होंठों की शोभा को वही जानते हैं, जो मोमिन हैं और हुकम के अधीन हैं।

Nijanand App

और तले जो अधुर, दोऊ जोड़ सोभित जो मुख।
रेखा लाल दोऊ सोभित, रूह देख पावे अति सुख।। १३३ ।।

नीचे का होंठ और ऊपर के होंठ जुड़े शोभा देते हैं। दोनों की लाल रेखाएं बड़ी सुन्दर शोभा देती हैं। जिनको रूहें देखकर बहुत सुखी होती हैं।

तले अधुर के लांक जो, मुख बराबर अनी तिन।
सेत बीच बिन्दा खुसरंग, ए मुख सोभा जानें मोमिन।। १३४ ।।

होठों के तले की गहराई में मुख के समान ही कोना दिखाई देता है। गोरे मुखारबिन्द के बीच में गोरे रंग के बीच में लाल रंग के बिन्दा की शोभा मुखारबिन्द की शोभा बढ़ाती है, जिसे मोमिन ही जानते हैं।

इन तले गौर हरवटी, जानों मुख सदा हंसत।
ए सोभा जाने अरवा अर्स की, जिन दिल में हक बसत।। १३५ ।।

लाल बिन्दी के नीचे गोरी हरवटी (ठोड़ी) है, जिससे मुखारबिन्द सदा हंसता दिखाई देता है। इस शोभा को परमधाम की रूहें ही जानती हैं, जिनके दिल में श्री राजजी महाराज बसे हैं।

ए रंग कहे मैं इन मुख, पर किन विध कहूं सलूक।
ए करते मुख बरनन, दिल होत नहीं टूक टूक।। १३६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने इस मुख से श्री राजजी महाराज के रंग का वर्णन किया है। अब सलूकी का वर्णन कैसे करूं? इस मुख का वर्णन करते समय दिल टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

फेर कहूं हरवटीय से, ज्यों सुध होए मुख कमल।
हक मुख मोमिन निरखहीं, जिन दिल अर्स अकल।। १३७ ।।

फिर से हरवटी का वर्णन करती हूं, जिससे मोमिनों को मुख कमल की सुध आ जाए। जिनके दिल में परमधाम की सुध है, वही मोमिन श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द को देखते हैं।

हरवटी गौर मुख मुतलक, खुसरंग बिन्दा ऊपर।
बीच लांक तले अधुर, चार पांखड़ी हुई बराबर।। १३८ ।।

हरवटी गोरे रंग की है। हरवटी के ऊपर लाल रंग का बिन्दा शोभा देता है। होंठों के नीचे की गहराई फूल की चार पंखुड़ी की तरह शोभा देती है।

गौर पांखड़ी दो लांक की, लाल पांखड़ी दो तिन पर।
अधुर अधुर दोऊ जुड़ मिले, हुई लांक के सरभर।। १३९ ।।

गहराई की दो पंखुड़ियां गोरे रंग की हैं और उसके ऊपर दो लाल रंग की पंखुड़ी होंठों की हैं। श्री राजजी महाराज के दोनों होंठ मिल जाते हैं, तो उनकी शोभा गहराई के बराबर हो जाती है।

जोड़ बनी दोऊ अधुर की, निपट लाल सोभित।
तिन ऊपर दो पांखड़ी, हरी नेक टेढ़ी भई इत।। १४० ।।

दोनों होंठों की जोड़ी लाल दिखाई देती है। उसके ऊपर दो पंखुड़ी थोड़ी टेढ़ाई लिए हरी दिखाई देती हैं।

Nijanand App

दन्त सलूकी रंग की, इन जुबां कही न जाए।
मुख मुस्कत दन्त देखत, क्या केहे देऊं बताए।। १४१ ।।

दांत की सलूकी और रंग यहां की जबान से कैसे वर्णन करें? श्री राजजी महाराज जब मुस्कराते हैं, तो दांत दिखाई देते हैं। उनका वर्णन कैसे करूं?

क्यों कहूं रंग रसना, मुख मीठा बोल बोलत।
स्वाद लेत रस अर्स के, जुबां केहे ना सके सिफत।। १४२ ।।

रसना का रंग कैसे बताऊं, जिससे श्री राजजी महाराज रस भरी बोली बोलते हैं तथा परमधाम के रसों का स्वाद लेते हैं। वहां का वर्णन यहां की जबान नहीं कर सकती।

रस जानत सब अर्स के, रस बोलत रसना बैन।
रूहें एक सब्द सुनें रस का, तो पावें कायम सुख चैन।। १४३ ।।

श्री राजजी महाराज की रसना से बड़ी रस भरी आवाज आती है। तब सब तरह के रसों का स्वाद मिलता है। जिनका एक शब्द सुनने से ही रूहों को अखण्ड सुख मिल जाता है।

नेक अधुर दोऊ खोलहीं, दन्त लाल उज्जल झलकत।
अधुर लाल दो पांखड़ी, जानों के नित्य मुसकत।। १४४ ।।

श्री राजजी महाराज थोड़ा सा होंठ खोलते हैं, तो दांतों की लालिमा और उज्ज्वलता दिखाई देती है। दोनों होंठों की दो पंखुड़ियां हैं, जो सदा मुस्कराती रहती हैं।

दन्त उज्जल ऐनक ज्यों, माहें जुबां देखाई देत।
देख दन्त की नाजुकी, अति सुख मोमिन लेत।। १४५ ।।

दांत शीशे की तरह इतने उज्ज्वल हैं कि इनमें से रसना दिखाई देती है। दांतों की ऐसी कोमलता देखकर मोमिन बड़े सुख लेते हैं।

कबूं दन्त रंग उज्जल, कबूं रंग लालक।
दोऊ खूबी दन्तन में, माहें रोसन ज्यों ऐनक।। १४६ ।।

कभी दांतों का रंग उज्ज्वल होता है, कभी लाल। दोनों प्रकार की खूबियों के अन्दर जिह्वा (जीभ) दिखाई देती है।

दोऊ बीच अधुर रेखा मुख, कटाव तीन तीन तरफ दोए।
पांखें रंग सुरंग दोऊ उपली, चढ़ि टेढ़ी सोभा देत सोए।। १४७ ।।

मुखारबिन्द के दोनों होंठों के बीच की रेखाओं के तीन-तीन कटाव दिखाई देते हैं। उनकी पांखें दोनों लाल रंग की पतली चढ़ती हुई टेढ़ी शोभा दिखाई देती है।

खुसरंग बीच सिंघोड़ा, तले दो अनी ऊपर एक।
इन दोऊ पांखें खुसरंग, ए कटाव सोभा विसेक।। १४८ ।।

इस लालिमा के ऊपर बीच में नासिका की बनावट सिंघाड़े की तरह दिखाई देती है। इन दोनों की पांखें लाल रंग की हैं, जिनके कटाव की शोभा विशेष रूप की है।

Nijanand App

तिन अनी पर दूजी अनी, सोभित सिंघोड़ा सुपेत।
ऊपर पांखें दोऊ फिरवली, बीच छेद्र सोभा दोऊ देत।। १४९ ।।

उस कोने के ऊपर दूसरा कोना भी सफेद रंग के सिंघाड़े की तरह शोभा देता है। इनके ऊपर दो पांखें आई हैं, जिनके बीच नाक के छेद शोभा देते हैं।

इन फूल ऊपर आई नासिका, सो आए बीच अनी सोभाए।
तिन पर रेखा दोऊ तिलक की, रंग खिन में कई देखाए।। १५० ।।

इस फूल के ऊपर नासिका है जिसकी नोंक आई है, जिनके बीच की अति सुन्दर शोभा दिखाई देती है। जिस पर सुन्दर तिलक की दो रेखाएं आई हैं, जिनके रंग क्षण-क्षण बदलते हैं।

दोऊ नेत्र टेढ़े कमल ज्यों, अनी सोभा दोऊ अतन्त।
जब पांपण दोऊ खोलत, जानों कमल दो विकसत।। १५१ ।।

श्री राजजी महाराज के दोनों नेत्र कमल के समान टेढ़े हैं। उनके दोनों कोने अत्यन्त शोभा देते हैं। जब आंखों की दोनों पलकों को खोलते हैं, तो लगता है दो कमल के फूल खिल गए हैं।

नासिका के मूल सें, जानों कमल बने अदभूत।
स्याम सेत झांईं लालक, सोभा क्यों कहूं अंग लाहूत।। १५२ ।।

ऐसा लगता है कि नासिका की जड़ में दो अद्भुत कमल के फूल हैं, जिनमें कालापन, सफेदी और लालिमा झलकती है। परमधाम के ऐसे अंग का वर्णन कैसे करूं?

और कई रंग दोऊ कमल में, टेढ़े चढ़ते निपट कटाव।
मेहेर भरे नूर बरसत, हक सींचत सदा सुभाव।। १५३ ।।

नैन कमल में कई तरह के रंग हैं, जो तिरछे चढ़ते हुए और कई तरह के कटाव वाले हैं। यह श्री राजजी महाराज के नैन मेहर से भरपूर नूर की बरसात करते हैं। श्री राजजी महाराज अपने सहज स्वभाव से मोमिनों को अपने नूर से सींचते रहते हैं।

गौर गलस्थल गिरदवाए, और बीच नासिका गौर।
स्याह पांखड़ी कमल पर, सोभित टेढ़ियां नूर जहूर।। १५४ ।।

गाल का रंग चारों तरफ से गोरा है। नासिका भी गोरी है। नैन कमल के ऊपर भौंहों की काले रंग की पंखुड़ियां हैं और उनका टेढ़ेपन का नूर चमक रहा है।

अनी चार दोऊ कमल की, दो बंकी चढ़ती ऊपर।
अति स्याह टेढ़ी पांखड़ी, कछू अधिक दोऊ बराबर।। १५५ ।।

दोनों नेत्र कमल के चारों कोने तथा दोनों का तिरछापन ऊपर को चढ़ता नजर आता है। उनके ऊपर टेढ़ी पंखुड़ी काली भौंहें नजर आती हैं।

उज्जल निलाट तिन पर, आए मिली केस किनार।
सोहे रेखा बीच तिलक, जुबां कहा कहे सोभा अपार।। १५६ ।।

भौंहों के ऊपर माथा अति उज्ज्वल है, जिस पर बालों की किनारें आकर मिलती हैं। माथे (मस्तक) के बीच तिलक की रेखाएं हैं, जिनकी बेशुमार शोभा है। जबान से कही नहीं जाती।

Nijanand App

दोऊ तरफों रेखा हरवटी, आए मिली कानन।
गौर कान सोभा क्यों कहूं, नहीं नेत्र जुबां मेरे इन।। १५७ ।।

हरवटी के दोनों तरफ यह रेखाएं कानों को जाकर मिलती हैं। कान बड़े सुन्दर गोरे हैं, जिन्हें यहां के नेत्र देख नहीं सकते और जबान वर्णन नहीं कर सकती।

गौर गाल दोऊ निपट, माहें झलकत मोती लाल।
ए सोभा कान की क्यों कहूं, इन जुबां बिना मिसाल।। १५८ ।।

दोनों गाल गोरे हैं। इनमें कानों के लाल और मोती झलकते हैं। बिना उपमा के कानों की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

केस रेखा कानों पीछे, बीच में अंग उज्जल।
हक मुख सोभा क्यों कहिए, इन जुबां इन अकल।। १५९ ।।

कानों के पीछे बालों की रेखाएं हैं और उनके बीच का अंग बड़ा उज्ज्वल दिखाई देता है। ऐसे श्री राजजी के मुखारबिन्द की शोभा यहां की जबान और बुद्धि से कैसे कहूं?

मुकट बन्यो सिर पाचको, रंग नंग तामें अनेक।
जुदे जुदे दसों दिस देखत, रंग एक पे और विसेक।। १६० ।।

श्री राजजी महाराज के माथे पर पाच के नग का मुकुट है, जिसमें अनेक तरह के नगों के रंग हैं। अलग-अलग रंग को जब दसों दिशाओं में देखते हैं तो एक रंग से दूसरा और अच्छा लगता है।

असल नंग पाच एक है, असल रंग तामें दस।
दस दस रंग हर दिसें, सोभा क्यों कहूं जवेर अर्स।। १६१ ।।

मुकुट में असली नग पाच का है और फिर उसमें दस रंग दिखाई देते हैं, जो दसों दिशाओं में शोभा देते हैं। परमधाम के ऐसे मुकुट के जवेर का कैसे वर्णन करूं?

और मुकट सिर हक के, केहेनी सोभा तिन।
सो न आवे सोभा सब्द में, मुकट क्यों कहूं जुबां इन।। १६२ ।।

श्री राजजी महाराज के सिर पर जो मुकुट है, उसकी शोभा का वर्णन करना है। उस मुकुट की शोभा शब्दातीत है। यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

दस रंग कहे एक तरफ के, दूजी तरफ दस रंग।
सो रंग रंग कई किरने उठें, किरन किरन कई तरंग।। १६३ ।।

मुकुट के एक तरफ दस रंग हैं। वैसे ही दस रंग दूसरी तरफ हैं। इन रंगों की कई किरणें हैं और किरणों में कई तरंगें उठती हैं।

किन विध कहूं सलूकियां, हर दिस सलूकी अनेक।
देख देख जो देखिए, जानों उनथें एह नेक।। १६४ ।।

मुकुट की सलूकी कैसे बताऊं? हर दिशा में अनेक तरह की शोभा है। जब बार-बार देखती हूं तो एक से दूसरी अच्छी लगती है।

Nijanand App

एक दोरी रंग नंग दस की, ऐसी मूल मुकट दोरी चार।
गिरदवाए निलवट पर, सुख क्यों कहूं सोभा अपार।। १६५ ।।

मुकुट में दस रंग की एक डोरी आई है। ऐसी चार डोरी घेरकर आई हैं, जो माथे के चारों तरफ शोभा देती हैं। इस बेशुमार सुख का वर्णन कैसे करूं?

यामें एक दोरी अव्वल तले, कांगरी दस रंग ता पर।
तिन दोरी पर बनी बेलड़ी, और कहूं सुनो दिल धर।। १६६ ।।

इस मुकुट में नीचे एक डोरी आई है, जिसमें दस रंगों के कंगूरे आए हैं। उसके ऊपर जो डोरी आई है उसमें बेलें बनी हैं, जिसका मैं वर्णन करती हूं। तुम ध्यान से सुनो।

इन पर भी दोरी बनी, ता पर बेल और जिनस।
तिन पर दोरी और कांगरी, जानों उनथें एह सरस।। १६७ ।।

इस डोरी के ऊपर जो डोरी बनी है उसमें कई तरह की बेलें और नक्शकारी है। इसके ऊपर चौथी डोरी है, जिसमें कंगूरे बने हैं। लगता है यह उनसे भी अच्छे हैं।

चारों दोरी के रंग कहे, और दस रंग कांगरी दोए।
और जिनस दो बेल की, रंग बोहोत ना गिनती होए।। १६८ ।।

मैंने चारों डोरी के रंग बताए हैं, दो डोरी में दस रंगों की कांगरी बताई है। दो में बेलों की शोभा बताई है, जिनके बेशुमार रंग हैं, जिनकी गिनती नहीं हो सकती।

दस रंग कांगरी के कहूं, चार मनके ऊपर तीन।
दो तीन पर एक दो पर, ए जानें दस रंग रूह प्रवीन।। १६९ ।।

कांगरी के दस रंग बताती हूं। पहले चार मनके, फिर तीन मनके, फिर दो और दो के ऊपर एक। यह दस मनके दस रंग के हैं, जो रूहों को अच्छे लगते हैं।

ए दस रंग के मनके दस, ऊपर एक रंग तले दोए।
दोए रंग तले तीन हैं, तीन रंग तले चार सोए।। १७० ।।

यह दस मनके दस रंग के हैं। ऊपर वाला मनका एक रंग, नीचे वाले दो-दो रंग के, उसके नीचे वाले तीन-तीन रंग के और उसके नीचे वाले चार-चार रंगों के हैं।

इन विध चार दोरी भई, और दोए भई कांगरी।
दोए बेली कई रंगों की, ए गिनती जाए न करी।। १७१ ।।

इस तरह से चार डोरी और दो कांगरी आई हैं। दो बेलों में कई रंग हैं, जिनकी गिनती नहीं होती है।

ऊपर फिरते फूल कटाव कई, कई बूटियां नकस।
तिन पर कही जो कांगरी, फिरती अति सरस।। १७२ ।।

इसके ऊपर कई तरह के फूल, कटाव, बेलियां, नक्शकारी है। उसके ऊपर जो कांगरी आई है, वह बड़ी सुन्दर है।

Nijanand App

तिन ऊपर टोपी बनी, ऊपर चढ़ती अनी एक।
तले कटाव कई रंग नंग, ए अनी फूल बन्यो विसेक।। १७३ ।।

इसके ऊपर टोपी बनी है, जिसके ऊपर चढ़कर एक नोक आई है। उस नोक के नीचे कई रंग नग के कटाव हैं। ऐसे सुन्दर फूल की बनावट की नोक बनी है।

तीन खूंने तिन ऊपर, दो दोऊ तरफों बीच एक।
दस दस नंग तिनों में, सो मोमिन कहें विवेक।। १७४ ।।

उस नोक के ऊपर तीन कलंगियां हैं दो दोनों तरफ, एक बीच में। उनमें दस-दस नग हैं। मोमिन इसका विवरण जानते हैं।

मानिक मोती पांने नीलवी, गोमादिक पाच पुखराज।
और हीरा नंग लसनियां, बीच मनि दसमी रही बिराज।। १७५ ।।

माणिक, मोती, पन्ना, नीलवी, गोमेद, पाच, पुखराज, हीरा, लसनियां और बीच में मणि के दस नग शोभा देते हैं।

ए दस रंग नंग तिनों में, फिरते बने तीन फूल।
तले डांड़ियां रंग अनेक हैं, ए सोभा देख हूजे सनकूल।। १७६ ।।

इन दसों नगों के रंग तीनों कलंगियों में हैं, जिसको घेरकर तीन फूल आए हैं। इनकी डंडियों में भी अनेक रंग हैं। यह शोभा देखकर मन अति प्रसन्न होता है।

दसों दिसा जित देखिए, मन चाह्या रूप देखाए।
बिना निमूने इन जुबां, किन बिध देऊं बताए।। १७७ ।।

दसों दिशाओं में जहां भी देखें, मन की चाहना अनुसार ही मुकुट का रूप दिखाई देता है। बिना नमूने के संसार की जबान से मैं कैसे तुम्हें बताऊं?

जिन रूह का दिल जिन विध का, सोई विध तिन भासत।
एक पलक में कई रंग, रुह जुदे जुदे देखत।। १७८ ।।

रूह के दिल में जैसी इच्छा होती है, उसी तरह का मुकुट दिखाई देता है, जो एक पल में कई रंग बदलता है, जिसे रूहें अलग-अलग तरीके से देखती हैं।

एह मुकुट इन भांत का, पल में करे कई रूप।
जो रूह जैसा देख्या चाहे, सो तैसा ही देखे सरूप।। १७९ ।।

यह मुकुट इस तरह का है कि पल में इसके कई तरह के रूप बदल जाते हैं। रूह जैसा देखना चाहती है, मुकुट का वैसा स्वरूप बन जाता है।

मैं मुकट कहूं बुध माफक, ए तो अर्स जवेर के नंग।
नए नए कई भांत के, कई खिन में बदले रंग।। १८० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं मुकुट का वर्णन अपनी बुद्धि के अनुसार कहती हूं, वरना यह तो परमधाम के नग हैं, जो एक पल में कई तरह के रंगों और रूपों में बदल जाते हैं।

Nijanand App

और विध मुकट में, रूहें आवें सब मिल।
सब रूप रंग देखे इनमें, जो चाहे जैसा दिल।। १८१ ।।

मुकुट की एक और विशेषता देखो कि जब रूहें सब मिलकर इकट्ठी आती हैं, तो जिनकी चाहना जैसी होती है उनको वैसा ही रूप दिखाई देता है।

याही भांत सब भूखन, याही भांत वस्तर।
वस्तर भूखन सब एक रस, ज्यों कुन्दन में जड़तर।। १८२ ।।

इसी तरह के आभूषण हैं और वस्त्र हैं, जो एक रस हैं और सोने में जड़े हैं।

ए जड़े घड़े किन ने नहीं, ना पेहेर उतारत।
दिल चाहे रंग खिन में, मन पर सोभा फिरत।। १८३ ।।

इन वस्त्रों को, आभूषणों को न किसी ने बनाया है, न किसी ने जड़ा है। न किसी ने पहना ही है। न किसी ने उतारा है। एक पल में दिल के चाहे अनुसार इसकी शोभा बदल जाती है।

जिन खिन रूह जैसा चाहत, सो तैसी सोभा देखत।
बारे हजार देखें दिल चाहे, ए किन विध कहूं सिफत।। १८४ ।।

जिस पल में रूह जैसा देखना चाहती है उसे वैसी ही शोभा दिखाई देती है। इस तरह से बारह हजार रूहें अपने दिल के अनुसार शोभा देखती हैं, जिनकी सिफत कैसे बताऊं?

मोती करन फूल कुंडल, कहूं केते नाम भूखन।
पलमें अनेक बदलें, सुन्दर सरूप कानन।। १८५ ।।

मोती, कर्णफूल, कुण्डल और अनेक आभूषणों के नाम हैं, जो सुन्दर कानों में एक पल में अनेक तरह के रूप में बदल जाते हैं।

जवेर कहे मैं अर्स के, और जवेर तो जिमी से होत।
सो हक बका के अंग को, कैसी देखावे जोत।। १८६ ।।

मैंने परमधाम के सिनगार में जवेर कहा है, पर जवेर तो जमीन से पैदा होता है, फिर श्री राजजी महाराज के अखण्ड अंग की शोभा को यहां की किस उपमा से बताएं?

और नई पैदास अर्स में नहीं, ना पुरानी कबूं होए।
या रसांग या जवेर, जिन जानों अर्स में दोए।। १८७ ।।

परमधाम में नया कुछ पैदा नहीं होता और न कुछ पुराना है। परमधाम के जवेर हों, नग हों, यह सब एक हैं, इन्हें दो नहीं समझना।

अर्स साहेबी बुजरक, तिनको नाहीं पार।
ए नूर के एक पलथें, कई उपजे कोट संसार।। १८८ ।।

परमधाम की साहेबी बहुत भारी और बेशुमार है। श्री राजजी महाराज के सत अंग (अक्षर) के एक पल में कई करोड़ों संसार पैदा हो जाते हैं।

Nijanand App

सो नूर नूरजमाल के, नित आवें दीदार।
तिन हक के वस्तर भूखन, ए मोमिन जानें विचार।। १८९ ।।

वह अक्षर ब्रह्म श्री राजजी महाराज के दर्शन के लिए प्रतिदिन आते हैं। उन श्री राजजी महाराज के वस्त्र और आभूषणों की महिमा को मोमिन दिल में विचार कर लेंगे।

जिन मोमिन की सिफायत, करी होए मेंहेंदी महंमद।
सो जानें अर्स बारीकियां, और क्या जाने दुनी जो रद।। १९० ।।

जिन मोमिनों की महिमा इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने की है, वही परमधाम की बारीक (खास) बातें जानते हैं। बाकी जो दुनियां नाशवान है, इस हकीकत को कैसे जान सकती है?

पेहेनावा नूरजमाल का, वस्तर या भूखन।
ज्यों नूर का जहूर, ए जानत अर्स मोमिन।। १९१ ।।

श्री राजजी महाराज के सिनगार में वस्त्र या आभूषणों के नूर को परमधाम के मोमिन ही जानते हैं।

ए कबूं न जाहेर दुनी में, अर्स बका हक जात।
सो इन जुबां इत क्या कहूं, जो इन सरूप को सोभात।। १९२ ।।

हक श्री राजजी की जात परमधाम के मोमिन हैं जो आज दिन तक इस दुनियां में जहिर ही नहीं हुए थे तो उनकी शोभा इस जबान से मैं अब क्या कहूं?

वस्तर भूखन हक के, ए केहेनी में ना आवत।
सिनगार करें दिल चाह्या, जो सबों को भावत।। १९३ ।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्र और आभूषणों की शोभा कही नहीं जाती, क्योंकि वह रूहों के दिल चाहा सिनगार करते हैं जो सबको अच्छा लगता है।

तो ए क्यों आवे बानी में, कर देखो सहूर हक।
ए अर्स तनों विचारिए, तुम लीजो बुध माफक।। १९४ ।।

अपनी परआतम के तनों से श्री राजजी महाराज की शोभा को देखो और बुद्धि माफिक ग्रहण करो, क्योंकि यह शोभा कही नहीं जा सकती।

अर्स में भी रूहें लेत हैं, जैसी खाहिस जिन।
रूह जैसा देख्या चाहे, तिन तैसा होत दरसन।। १९५ ।।

परमधाम में जिसकी जैसी चाहना होती है, रूहें उसी शोभा को देखती हैं। जो जैसा रूप देखना चाहती है, उसको वैसा ही रूप दिखाई देता है।

वस्तर भूखन किन ना किए, हैं नूर हक अंग के।
ए क्यों आवें इन केहेनी में, अंग सांई के सोभावें जे।। १९६ ।।

यह वस्त्र और आभूषण किसी ने न बनाए हैं न गढ़े हैं। यह श्री राजजी महाराज के अंग का नूर है जो श्री राजजी महाराजजी के अंग को शोभा देता है, वह यहां कैसे कहा जाए?

Nijanand App

अपार सूरत साहेब की, अपार साहेब के अंग।
अपार वस्तर भूखन, जो रेहेत सदा अंगो संग।। १९७ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग की, स्वरूप की, वस्त्र और आभूषणों की शोभा बेशुमार है, जो सदा श्री राजजी महाराज के अंग के साथ रहती है।

जो सोभा हक सूरत की, सो क्यों पुरानी होए।
नई पुरानी तित कहावत, जित कहियत हैं दोए।। १९८ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप की शोभा कभी पुरानी नहीं होती। नई-पुरानी वहां कही जाती है, जहां दो हों, अर्थात् अंग अलग हो और सिनगार अलग हो, वहीं नया-पुराना होता है।

इत कबूं न होए पुराना, ना पैदा कबूं नया।
दीदार करें रूहें खिन में, खिन खिन दिल चाह्या।। १९९ ।।

यहां नया-पुराना कभी नहीं होता। रूहें जैसा दिल में चाहती हैं, एक-एक क्षण में बदले हुए सिनगार का दर्शन करती हैं।

जामा पटुका और इजार, ए सबे हैं एक रस।
कण्ठ हार सोभा जामें पर, जानों एक दूजे पे सरस।। २०० ।।

जामा, पटका और इजार सब एक रस हैं और अंग की शोभा हैं। इस तरह से जामा के ऊपर गले में हारों की शोभा है। वह एक दूसरे से अधिक अच्छे लगते हैं।

कण्ठ तले हार दुगदुगी, कई विध विध के विवेक।
कई रंग जंग जोतें करे, देखत अलेखे रस एक।। २०१ ।।

गले में हारों के नीचे दुगदुगी है, जो कई-कई तरह की हैं, जिनमें कई तरह के रंगों की किरणें आपस में टकराती हैं और सब बेशुमार एक रस दिखाई देती हैं।

जुड़ बैठी जामें पर चादर, सोभा याही के मान।
ए नाम लेत जुदे जुदे, हक सोभा देख सुभान।। २०२ ।।

जामे के ऊपर चादर अंग पर शोभा देती है, जो उसी के अनुसार है। श्री राजजी महाराज की शोभा को देखकर मैं अलग-अलग वस्त्रों के नाम बताती हूं। वह सब अंग की ही शोभा हैं।

बगलों कोतकी कटाव, और बंध बेल गिरवान।
रंग जुदे जुदे झलकत, रस एकै सब परवान।। २०३ ।।

जामे की बगलों में सुन्दर भरत (कशीदाकारी) का काम किया हुआ दिखता है। जामे की सुन्दर तनी दिखाई देती है। इनमें अलग-अलग रंग झलकते दिखाई देते हैं, परन्तु है सब अंग की शोभा।

बांहें बाजू बंध सोभित, रंग केते कहूं गिन।
तेज जोत लरें आकास में, क्यों असल निरने होए तिन।। २०४ ।।

बाजूबन्ध बाहों पर बंधे शोभा देते हैं, जिनके रंग गिनकर कितने बताऊं? इनकी किरणें आकाश में टकराती हैं, तो असल रंग कौन सा है, यह निर्णय कैसे हो?

Nijanand App

क्यों कहूं सोभा फुंदन, लटकत हैं एक जुगत।
आहार देत हैं आसिकों, देख देख न होए तृपित।। २०५ ।।

बाजूबन्ध के फुंदन एक विशेष युक्ति के साथ लटकते हैं, जिसे देख-देखकर आशिक रूह की चाहना तृप्त नहीं होती।

या विध काड़ों पोहोंचियां, या विध कड़ों बल।
कई ऊपर रंग जंग करें, तामें गिने न जाए असल।। २०६ ।।

इसी तरह से कलाई में कड़े और पोहोंची हैं। कड़ों के बल की कैसे बताऊं? इसके ऊपर के कई रंग आपस में टकराते हैं, जिसमें से असल रंगों को भी गिना नहीं जा सकता।

हस्त कमल अति कोमल, उज्जल हथेली लाल।
केहेते लीकें सलूकियां, हाए हाए लगत न हैड़े भाल।। २०७ ।।

श्री राजजी महाराज का हस्त कमल अति कोमल कमल के समान है, जिसकी हथेली उज्ज्वल लाल रंग की है। हथेलियों की रेखाओं की बनावट वर्णन करते समय हाय! हाय! दिल में घाव क्यों नहीं लगते?

पतली पांचों अंगुरियां, पांचों जुदी जुगत।
जुदे जुदे रंग नंग मुंदरी, सोभा न पोहोंचे सिफत।। २०८ ।।

हाथों की पांचों उंगलियां पतली व अलग युक्ति की हैं। इसमें अलग-अलग रंग के नगों की मुंदरियां हैं, जिनकी शोभा और सिफत का बयान नहीं हो पाता।

निरमल अंगुरियों नख, ताकी जोत भरी आकास।
सब्द न इन आगूं चले, क्यों कहूं अर्स प्रकास।। २०९ ।।

उंगलियों के नख बड़े निर्मल हैं, जिनकी रोशनी आकाश में भरी है। अब इसके आगे कहने की शक्ति नहीं है, तो परमधाम की इस रोशनी का वर्णन कैसे करूं?

अब चरन कमल चित्त देय के, बैठ बीच खिलवत।
देख रूह नैन खोल के, ज्यों आवे अर्स लज्जत।। २१० ।।

हे मेरी आत्मा! अब श्री राजजी के चरण कमलों को चित्त में लेकर मूल-मिलावा में ध्यान लगा। अपनी आत्मदृष्टि खोलो, जिससे परमधाम का सुख मिले।

इत बैठ निरख चरन को, देख चकलाई चित्त दे।
नरम तली अति उज्जल, रूह तेरा सुख दायक ए।। २११ ।।

यहीं बैठकर श्री राजजी महाराज के चरणों की सुन्दरता को चित्त से देख, जिनके चरणों की तली बहुत नर्म और उज्ज्वल है और जो तुझे सुख देने वाली है।

जोत देख चरन नख की, जाए लगी आसमान।
चीर चली सब जोत को, कोई ना इन के मान।। २१२ ।।

हे मेरी रूह! श्री राजजी के चरणों के नख की जोत को देख, जो आसमान तक जाती है। इनके समान ही सब नगों की जोत चीरकर आसमान तक जाती है। इनके समान कोई उपमा नहीं है। कैसे समझाऊं?

Nijanand App

तेज कोई ना सेहे सके, बिना अर्स रूह मोमिन।
तेजें उड़े परदा अन्धेरी, ए सहे बका अर्स तन।। २१३ ।।

नखों के तेज को सहन करने की शक्ति परमधाम की रूहों के अतिरिक्त किसी को नहीं है। इनके तेज से इस संसार का तन छूट जाता है। इसको सहन करने की शक्ति परमधाम के तनों को ही है।

अर्स तन की एह बैठक, ए जोतै के सींचेल।
ए अरवा तन सब अर्स के, इनों नजरों रहे ना खेल।। २१४ ।।

परमधाम के तनों की मूल-मिलावे की बैठक श्री राजजी के चरणों के नख की जोत के ही आशिक है। यही परमधाम के तनों की रूहें हैं। इनकी नजरों के सामने खेल टिक नहीं सकता।

पांउं देख देख भूखन, कई विध सोभा करत।
सो नए नए रूप अनेक रंगों, खिन खिन में कई फिरत।। २१५ ।।

चरणों को देख-देखकर आभूषणों की तरफ देखती हूं, जो कई तरह की शोभा के हैं। यह आभूषण एक क्षण में कई तरह के रंगों में नए-नए रूपों में बदल जाते हैं।

चारों जोड़े चरन तो कहूं, जो घड़ी साइत ठेहेराय।
खिन में करें कोट रोसनी, सो क्यों आवे माहें जुबांए।। २१६ ।।

कांबी, कड़ला, घुंघरी, झांझरी जो चरण कमलों में पहन रखे हैं, उनकी शोभा एक क्षण के लिए स्थिर हो जाए तो कुछ वर्णन कर सकूं, परन्तु एक ही पल में वह कई तरह के रूप बदलते हैं तो इनकी रोशनी का यहां की जबान से कैसे वर्णन करूं?

हरी इजार माहें कई रंग, ऊपर जामा दावन सुपेत।
कई रंग झांई देख के, अर्स रूहें सुख लेत।। २१७ ।।

हरी इजार में कई तरह के रंग हैं, जिसके ऊपर सफेद रंग का जामा आया है। इन कई रंगों की झांई को देखकर परमधाम की रूहें बहुत सुख लेती हैं।

फुन्दन बन्ध अति सोभित, माहें रंग अनेक झलकत।
ए सेत हरे के बीच में, माहें नरम झाबे खलकत।। २१८ ।।

जामे की तनी के फुन्दन बड़े शोभायमान हैं, जिसमें कई तरह के रंग झलकते हैं। सफेद जामा, हरी इजार के बीच में फुन्दन के गुच्छे टकराते हैं।

जामें दावन सेत झलकत, जोत उठत आकास।
और जोत चढ़त करती जंग, पीत पटुके की प्रकास।। २१९ ।।

बागे की सफेद किरणें आकाश तक जाती हैं। इसी अनुसार पीले पटके की किरणें आकाश में जाकर टकराती हैं।

हार सोभित हिरदे पर, बाजू बन्ध पोहोंची कड़े।
सुन्दर सरूप सिर मुकट, दिल आसिकों देखत खड़े।। २२० ।।

गले में सुन्दर हार शोभा देते हैं। हाथ में बाजूबन्ध, पोहोंची और कड़े शोभा देते हैं। शीश पर सुन्दर मुकुट धारण किया है। यह शोभा आशिकों के दिल में अटक जाती है।

Nijanand App

चोली चादर हार झलकत, आकास रह्यो भराए।
तो सोभा मुख मुकट की, किन बिध कही जाए।। २२१ ।।

जामे की चोली और आसमानी चादर और गले के हारों की जोत आकाश में भर रही है, तो फिर मुखारबिन्द और मुकुट की शोभा का कैसे वर्णन करें?

मीठी सूरत किसोर की, गौर लाल मुख अधुर।
ए आसिक नीके निरखत, मुख बानी बोलत मधुर।। २२२ ।।

श्री राजजी महाराज का लुभावना मुखारबिन्द (मुख), गोरे लाल अधर, जिससे मधुर रसीली वाणी बोलते हैं, आशिक रूहें अच्छी तरह से देखती हैं।

चारों चरन बराबर, सुभान और बड़ी रूह जी।
गौर सब गुन पूरन, सुन्दर सोभा और सलूकी।। २२३ ।।

श्री राजश्यामाजी के चारों चरण गोरे, सब गुणों से भरे, सनकूल और सुन्दर शोभा देते हैं।

तेज जोत नूर भरे, लाल तली कोमल।
लाल लांके लीकें क्यों कहूं, रूह निरखे नेत्र निरमल।। २२४ ।।

चरणों की तली लाल है। लांक की रेखाएं भी लाल हैं, जो तेज से भरपूर हैं। इनको रूहें अपने निर्मल नेत्रों से देखती हैं।

चारों तरफों चकलाई, फना अदभुत रूह खैंचत।
एड़ियां अति अचरज, इत आसिक तले बसत।। २२५ ।।

पांव के पंजे के चारों ओर की सुन्दरता रूह को आकर्षित करती है। चरणों की एड़ियों की शोभा अद्‌भुत है। आशिक रूहें इन चरणों के तले ही रहती हैं।

चारों चरन अति नाजुक, जो देखूं सोई सरस।
ए अंग नाहीं तत्व के, याकी जात रूह अर्स।। २२६ ।।

श्री राजजी और श्री श्यामाजी के चारों चरण बहुत नाजुक हैं। जिसे देखती हूं वही अच्छा लगता है। इनके अंग पांच तत्व के नहीं हैं। यह परमधाम में अखण्ड हैं।

ए मेहेर करें चरन जिन पर, देत हिरदे पूरन सरूप।
जुगल किसोर चित्त चुभत, सुख सुन्दर रूप अनूप।। २२७ ।।

श्री राजश्यामाजी के चरण जिन पर कृपा कर देते हैं, उनके हृदय में दोनों स्वरूप पूर्ण रूप से विराजमान हो जाते हैं। श्री राजश्यामाजी की शोभा चित्त में चुभ जाती है। इनका सुन्दर स्वरूप उपमा रहित सुन्दर सुख देने वाला है।

जुगल किसोर अति सुन्दर, बैठे दोऊ तखत।
चरन तले रूहों मिलावा, बीच बका खिलवत।। २२८ ।।

श्री राजश्यामाजी के दोनों सुन्दर स्वरूप तख्त पर विराजमान हैं। अखण्ड मूल-मिलावा के बीच रूहें उनके चरणों के तले बैठी हैं।

Nijanand App

महामत कहे मेहेबूब की, जेती अर्स सूरत।
सो सब बैठीं कदमों तले, अपनी ए निसबत।। २२९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम में जितनी श्री राजजी की अंगना हैं, वह सब उनके चरण कमलों के तले बैठी हैं। यही हमारी निसबत है, हमारा यही अर्श है।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। १४४६ ।।

सिनगार कलस तिन सिनगार बरनन विरहा रस

क्यों बरनों हक सूरत, अब लों कही न किन।
ए झूठी देह क्यों रहे, सुनते एह बरनन।। १ ।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन कैसे करूं, जो आज तक किसी ने नहीं किया। यह वर्णन सुनकर यह झूठी देह कैसे रह सकती है?

बरनन आसिक कर ना सके, और कोई पोहोंचे न आसिक बिन।
हक जाहेर क्यों होवहीं, देखतहीं उड़े तन।। २ ।।

आशिक रूहें श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन नहीं कर सकतीं और इनके सिवाय वहां कोई पहुंचता नहीं है, तो फिर श्री राजजी महाराज की हकीकत जाहिर कैसे हो, जिन्हें देखते ही यह तन नष्ट हो जाता है।

हक देखे वजूद ना रहे, ज्यों दारू आग से उड़त।
यों वाहेदत देखें दूसरा, पाव पल अंग न टिकत।। ३ ।।

जैसे बारूद का पहाड़ जरा सी आग की चिनगारी से उड़ जाता है, वैसे ही श्री राजजी महाराज को देखकर सांसारिक तन नहीं रह सकते। इस तरह से मोमिनों के अतिरिक्त दूसरा कोई एक क्षण मात्र के लिए भी श्री राजजी महाराज को नहीं देख सकता।

हक इस्क आग जोरावर, इनमें मोमिन बसत।
आग असल जिनों वतनी, यामें आठों जाम° अलमस्त।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज के इश्क की आग बड़ी जोरदार है, जिसमें मोमिन रहते हैं। जिन मोमिनों को इश्क की आग लगी है, वह आठों पहर उसी में मग्न रहते हैं।

जो निस दिन रहे आग में, ताए आगै के सब तन।
वाको जलाए कोई ना सके, उछरे आगै के वतन।। ५ ।।

जो रात-दिन इश्क की आग में रहते हैं, उनके तन सभी आग के हो जाते हैं। उनको दूसरा फिर कोई जला नहीं सकता। वह इश्क की आग में ही अपने घर में उछलते-कूदते रहते हैं।

आग जिमी पानी आग का, आग बीज आग अंकूर।
फल फूल बिरिख आग का, आग मजकूर आग सहूर।। ६ ।।

इनके लिए जमीन, पानी, बीज, फल, फूल सब आग के हैं। विचार करके देखो तो सब जगह इश्क का ही रंग है।

Nijanand App